॥ श्री श्रीगौरहरिर्जयति ॥

❋ ब्रजयात्रा ❋

एवं

—: श्री चरन पूर्णानन्द जी ग्रन्थावली :—

रचयिता :—

गोस्वामी सुन्दरलाल जी

अर्थसहायक :—

श्रीमान् गेन्दीलाल जी

शंकरलाल रूपनारायण जौहरी

गोपालजी का रास्ता

जयपुर (राजस्थान)

प्रकाशक :—

कृष्णदास बाबा

ग्वालियर मन्दिर, कुसुम सरोवर, राधाकुण्ड (मथुरा)

[श्री राधाष्टमी, सम्वत् २०१६]

॥ श्री राधारमणो जयति ॥

जयगौर !

पूज्यपाद प्रपितामह माध्वगौड़ेश्वराचार्य श्री गोस्वामी सुन्दरलाल जी महाराज, श्रीमद्‌भागवत के मर्मज्ञ प्रसिद्ध वक्ता थे। उस समय की प्रचलित कथा-शैली में आपने विशुद्ध ब्रज-भाषा में श्री भागवत सम्बन्धी कई पुस्तकें लिखीं परन्तु ब्रजभाषा साहित्य का यह संग्रह अप्रकाशित ही रहा और सम्पूर्ण प्राप्य भी नहीं है।

श्री गोस्वामी सुन्दरलाल जी महाराज की प्रसिद्धि एवं प्रतिष्ठा उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात प्रान्तों में कथा व्यास के रूप में थी।

आपका जीवन ही श्रीजी की सेवा और श्रीमद्‌भागवत का अध्यापन आपके नित्य नियम में था। ब्रजभाषा में, आपने कुछ पदों की रचना भी की।

स्वयं प्रकट श्री श्री राधारमणदेव की सेवा के सुप्रबन्ध और भोग राग के निमित्त अर्थ संचय में आप सदैव तत्पर रहे।

अपने गुरुजनों से सुना है कि श्री गो० सुन्दरलाल जी महाराज को अष्टादशाक्षर श्री गोपाल मन्त्र सिद्ध था।

कर्त्तव्यनिष्ठ बाबा कृष्णदास जी कुसुमसरोवर (गोवर्धन) वाले जिस लगन और परिश्रम से संस्कृत और ब्रजभाषा के अप्रकाशित अप्राप्य से अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन कर, माध्व-गौडीय सम्प्रदाय और ब्रजभाषा-साहित्य की सेवा कर रहे हैं वह

प्रशंसनीय-स्मरणीय रहेगी। स्वयं अकिञ्चन होते हुए भी, अपने उद्योग से, धार्मिक तथा साहित्यिक जनों से प्राप्त अर्थ द्वारा जैसे आवश्यक उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन अब तक इनके द्वारा हुआ है, वे ग्रन्थ संग्रहणीय हैं। ऐसे विरक्त वैष्णव ५-१० भी मिल जायें तो धार्मिक-साहित्यिक प्राचीन-ग्रन्थों का प्रचार, प्रसार, विशेष रूप में हो सके। पूज्य श्री सुन्दरलाल जी महाराज को प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन का श्रेय कृष्णदास जी को है।

इस ब्रज यात्रा के साथ चरणपूर्णानन्द जी बिरचित ग्रन्थावली भी दी जा रही है, जिसमें पांच प्रकरण है।

(१) विवेक दोहावली, (२) नाम माहात्म्य, (३) कर्म साधन,
(४) वैराग्य साधन, (५) तत्व विचार।

ग्रन्थकार श्री नित्यानन्द प्रभू के पुत्र श्री वीरचन्द्रजी, उनके पुत्र श्री रामचन्द्र जी, उनके पुत्र श्री राघवेन्द्र जी के शिष्य हैं।

इस पुस्तक की प्राचीन प्रति उक्त बाबा के पास है।

श्री राधारमण भगवान के पवित्र पाद पद्मों में प्रार्थना है कि अपनी कृपा एवं प्रेरणा से बाबा कृष्णदास जी द्वारा ग्रन्थों का प्रकाशन कराते रहें।

श्री चैतन्य जयन्ती
श्री राधारमण मन्दिर
वृन्दाबन

आचार्य अनन्तलाल गोस्वामी

॥ श्री श्रीराधारमणो जयति ॥

❀ श्री राधारमण स्तोत्राष्टकम् ❀

प्रपन्नजनतापरप्रणयसिन्धुमावर्द्धयन्
क्षितावलमुरीकृतस्वमुखचन्द्रमोऽवस्थितिः ।
जगत्त्रयमनोहरोऽसितसरोजदेहद्युति-
र्मम स्फुरतु राधिकारमण उत्कचित्ते सदा ॥ १ ॥

स्फुरन्नवकिशोरतामृतसमुल्लासितश्रीभर
प्रलोभितजगत्त्रयीयुवतिबृन्दहृल्लोचनः ।
प्रसन्नमदलोल्लसन्मधुरमंजुलश्रीमुखो
मम स्फुरतु राधिकारमण उत्कचित्ते सदा ॥ २ ॥

उदारहसितद्युतिस्नपितमंजुबिंबाधरो
विलोलविपुलारुणप्रणयसद्मपद्मेक्षणः ।
चलन्मकरकुंडलद्युतिविलासिगण्डस्थलो
मम स्फुरतु राधिकारमण उत्कचित्ते सदा ॥ ३ ॥

मनोज्ञमृदुलांगुलीततिनिरुद्धरन्ध्रां मुखे
नियोज्य मुरलीं मुदा स्थित उदारसिंहासने ।
स्वकीयजनमंडली हृदयनेत्रसंतर्पणो
मम स्फुरतु राधिकारमण उत्कचित्ते सदा ॥ ४ ॥

स्मरोऽयमतिमोहनो न न सुधांशुरेवाथवा ।
महामधुरिमाथवा नयनचित्तयोरुत्सवः
इति प्रणयविह्वलैर्मनसि मानितो यो जनै-
र्मम स्फुरतु राधिकारमण उत्कचित्ते सदा ॥ ५ ॥

निरीक्ष्य कलिदूषितान्विविधतापतप्तान् क्षितौ
जनाननुजिघृक्षया सदयनन्दसूनुः स्वयम् ।
वभूव जनगोचरो य इह मौनमुद्रां दधन्
मम स्फुरतु राधिकारमण उत्कचित्ते सदा ॥ ६ ॥
अपारकरुणाम्बुधे प्रणयलभ्यनन्दात्मज–
प्रसन्नमुखचन्द्रमो ब्रजबिलासिनीवल्लभ ।
प्रसीद मयि कातरे वदत इत्थमुत्कंठया
मम स्फुरतु राधिकारमण उत्कचित्ते सदा ॥ ७ ॥
अमन्दकरुणारसोल्लसदपांगदृष्ट्या जनान्
नयन्नभिनबां दशां प्रणयवर्त्मनः कामपि ।
स्वपादकमलासवैरपि च तर्पयन्स्वान्मुहु–
र्मम स्फुरतु राधिकारमण उत्कचित्ते सदा ॥ ८ ॥
इतीह रचितं स्तवं पठति यो हि पद्याष्टकैः
स्मरन्रुचिरराधिकारमणपादपंकेदहम् ।
ददन्निजपदाम्वुजे रतिमनुत्तमां तं जनं
प्रपूर्णममलाशयं सुखयतात्स राधाप्रियः ॥ ९ ॥

इति श्रीमद्दामोदर दास गोस्वामि पाद विरचितं
श्री राधारमण स्तोत्राष्टकम्

(प्राचीन १ पृष्ठात्मक हस्तलिखित कापी से)

॥ श्री श्रीगौरांगमहाप्रभुर्जयति ॥

श्री बृजजात्रा

श्री ब्रज मंडल के मध्य में श्री मथुरा मंडल, ता में मुख्य-स्थल विश्रांत घाट, ता के दक्षिण ओर द्वादश घाट, गुह्यतीर्थ १ प्रयाग तीर्थ २ प्रयाग नें हरि की स्तुति कीनी। कनखल तीर्थ ३ तिंदुक तीर्थ ४ तिंदुक नाई को उद्धार कीयो, सूर्य्यतीर्थ ५ जहाँ बलटीलो है जहाँ बल ने तप करकें सूर्य सूं चिंतामणि लीनी। ध्रुवतीर्थ ६ ताके दक्षिण सप्त ऋषि तीर्थ ऋषि टीलो तहां सप्त ऋषि ने तप कीनो ७ अविमुक्ततीर्थ ८ अधिरूढ़तीर्थ ९ बटू-स्वामी १० मोक्षतीर्थ ११ बोधतीर्थ १२।

विश्रांत के उत्तर :—नवतीर्थ १ असिकुंड २ संयमनतीर्थ ३ धारापत्तन ४ नागतीर्थ ५ घंटाभरण ६ ब्रह्मलोकतीर्थ ७ सोमतीर्थ ८ सरस्वतीपत्तन तीर्थ ९ दशाश्वमेध घाट १० विघ्नराजतीर्थ ११ गोकोटितीर्थ तहां श्रीकुंड स्नान को फल १२।

पश्चिम कूं— गोकर्ण तीर्थ गोकर्णेस्वर शिब १ कृष्ण गंगा-तीर्थ, कालंजर शिब २ बैकुंठतीर्थ ३ चतुःसामुद्रीकूप ४ अक्रूर-तीर्थ ५ कुब्जाकूप ६।

मथुरा के नैऋत्य कोण में मधुवन १ तालबन तालकुंड धेनुक बध २ कुमुदबन कृष्णखेला कुमुदकुंड ३ अम्बिकावन, सरस्वती नदी, विद्याधरमुक्त स्थान, गोकर्ण शिब ४ मथुरा के पश्चिम दतिहा ग्राम दंतबक्रवध ५ गरुड़गोबिंद ठाकुर मथुरा के पश्चिम बायुकोण में स्थान में श्रीदामा गरुड़ भयो आप द्वादश भुजा धरके तापे बैठें तासों गरुड़गोविंद भये, कुंड छटीकरा

ग्राम ६ संबीटकबन गंधेस्वरीतीर्थ सांतनु राजा नें तप कीनों तप कीनों सांतनु कुंड सूर्य्य की मूर्त्ती ७ वहुलाबन, बहुला गऊ, कृष्णकुंड, संकर्षण कुंड, मानसरोवर, बिहारस्थान ८ रालग्राम नंदबास ६ बसोदी जुनोदीग्राम ब्रजभानुबास १० ।

वायुकोण में–अरिष्ट ग्राम, अरिष्टासुर वध स्थान तथा गिरि के ईशान कोण में हरि के वाम पद की एड़ी के घात सं सब तीर्थ प्रगटे सो स्याम कुंड भयो तथा बृषासुर के खुर क्षत स्थान में सखीजन ने गोलाकार कुंड कीयो सो राधाकुंड भयो, श्रीकुंड के उत्तरदिशा में चंद्रकांतमणि को षोडश दल कमला-कार अनंग मंडप है तहां सेतु स्थान है चंद्रकांत मणि को अनंग-मंजरी को। कुंड के उत्तर सुबर्ण को अष्टदल कमलाकार ललितानंदद नाम कुंज तहां राधाकृष्ण बिबिध बिहार करें हैं १ ललिता कुंज के बायुकोण में बसंतसुखद कुंज है। कुंड के ईशान कोण में विसाखा आनंददाई कुंज मणिमय षोड़शदला-कार तेसी लता पक्षी २ कुंड के पूर्व दिशा में चित्र बिचित्र चित्रा आनंददा कुंज तैसेई पक्षी ३ अग्निकोण में हीरा की अष्टदलाकार इंदलेखा सुखदा कुंज तैसेई पक्षी ४ दक्षिण कों सुबर्ण की चंपकलता सुखदा कुंज तैसेई बृक्ष पक्षी ५ नैऋत कोण मे नीलमणि की रंगदेबी सुखदा कुंज तैसेई वृक्ष पक्षा तहां प्रिया प्रीतम राग विद्या सुनें हैं ७ बायुकोण में मरकतमणि की सुदेवी सुखदा कुंज तैसेई वृक्ष पक्षी ८ स्याम कुंड के वायुकोण में मणि-बद्ध घाट तहां श्रीराधा नित्य स्नान करें। ता के उत्तर सुबल आनंददा कुंज तहां राधा कृष्ण सयन करें सुबल बाहिर पंखा खेंचे १ कृष्ण कुंड के उत्तर दिशा में स्वेतमणि की मधुमंगल आनंददा कुंज तैसेई बृक्ष पक्षी कृष्ण सु बिबिध चरचा करें हैं २ ईशान कोण में अरुण मणि की उज्वल आनंददा कुंज तैसेई

बृक्ष पक्षी ३ पूर्ब दिशा में नीलमणि की अर्जुन आनंददा कुंज तैसेई बृक्ष पक्षी ४ अग्निकोण में चित्र विचित्र मणि की गंधर्वा-नंददा कुंज तैसेई बृक्ष पक्षी ५ दक्षिणदिशा में हरितमणि की बिदग्ध आनंददा कुंज तहां चौपड़ क्रीड़ा ६ नैऋत्य कोण में भृंग-कोकिल आनंददा कुंज ब्रक्ष पक्षी ७ पश्चिम में बिचित्र मणि की दक्षण संनंद आनंददा कुंज तैसेई बृक्ष पक्षी ८ श्रीकुंड के पश्चिम माल्यहारी कुंड माधबीसाला तहां राधिका मोतिन को सृंगार करें ही तहां गायन के सृंगार कुं श्रीकृष्ण नें मोती मागे सखीन नें नही दीने तब मुक्ता बोये है सो मुक्ता चरित्र में व्याख्या है इति ॥

श्री कुंड के दक्षिण दिशा में मुखरा ग्राम है श्रीराधाजी की मुखरा नानी रहे है। प्रिया पीतम को क्रीड़ा स्थान। श्री कुंड के नैऋत्यकोण में मथुरा सें दो जोजन पश्चिम दल में श्रीगोबर्द्धन गिरि श्यामबर्ण मयूराकार। गिरि के ईशान कोण में रत्नसिंहासन तहां होली की पूर्णमासी कुं संखचूड बध, प्रिया पीतम बसंत में रास करें। गिरि के ईशान कोण में रामताल नाम जहां संखचूड के बध करन कुं बलदेब जी साल बृक्ष लेके गोपिन की रक्षा करी। रत्नसिंहासन के दक्षिण कुसुमसरोबर तहां मध्याह्न समैं सूर्य पूजा कु पुष्प बीन नें प्रियाजी नित्य आमें है तहां प्रिया प्रीतम को प्रथम मिलन। कुसुमसरोवर के पूर्व नारद कुंड है तहां स्नान तप करकें सखीबेश होकें नारद नें हरि-लीला देखी। गिरि के पूर्व ऊची बेदी तहां श्रीनंदजी ने ईंद्र को पूजन कीनों ईंद्रध्वज बेदी कहें हें। आगें चक्रतीर्थ चक्रेस्वरमहादेब मानसी-गंगा तहां नौकालीला कीनो ही श्रीराधा कृष्ण नें। गिरि के ऊपर श्रीहरिदेब मूर्त्ति, ताके उत्तर ब्रह्मकुंड तहां मनसादेबी। ताके दाहिनें पाप बिमोचन कुंड, ताके आगे ऋणबिमोचन

कुंड, ताके अग्निकोण में परासोली-ग्राम रासकुंड तहां बासंतिक-रास में अंतरध्यान हो कें गोपिन के भय सूं चतुर्भुज होकें बैठे गोपी नारायण जान कें दंडवत करके आगें गई पाछें श्रीराधिका आई तब पूछी कहूं कृष्ण देखे हैं तेंनें तब प्यारी के शुद्ध प्रेम सुं दो भुजा पेट में पैठ गई ता सुं पैठो ग्राम भयो। परासोली के नैऋत कोण में बलदेव को स्थान है संकर्षण कुंड ताके निकट चंद्रसरोबर चंद्राबली को कुंड ताके आगें गंधब कुंड गंधर्ब ने स्तुति कीनी। ताके पूर्व गौरी तीर्थ तहां चंद्राबली सखीन के संग गौरीपूजन के मिस आयके श्रीकृष्ण संग रमन करै है तहां कदंब-राज वृक्ष ताके निकट नीप कुंड तहां चंद्राबली के संग श्रीकृष्ण जलबिहार करें हें, ताके पास श्रीगोबिंदकुंड देबतागण ने खोदोहो गौबिंदाभिषेक समय तहां सर्वौषधि पंचामृत सें कृष्ण को अभिषेक कीनो आकाश गंग सो जल लाये। ताके निकट उत्तर कुं ईंद्रकुंड तहां स्तुति समें प्रेमाश्रु ईंद्र के पडे तासु भयो गोब्रिद-कुंड के उत्तर निबिड कुंज में श्रीनाथ जी है श्रीमाधबेंद्रपुरी कुं स्वप्न देके बाहर प्रगटे। कुंड के दाहिनें माधबेंद्रपुरी की बैठक ताके आगें दाननिवर्त्तन कुंड। गोबिंदकुंड के दक्षिण जतीपुरा नाम अन्नकूट ग्राम तहां गिरिराज के ऊपर उत्तर दिशा कुं श्रीगोपाल को स्थान है। पश्चिम में पूंछरी को लौठा है। ताके आगें स्याम ढाक ताके उत्तर अप्सराकुंड, अप्सरा नें नृत्य करकें गोब्रिद कुं रिझायो ताके प्रेमाश्रु सें कुंड भयो। ताके दाहिनें सुरभीकुंड तहां सुरभीनें स्तुति कीनी। ताके आगें गुलालकुंड होली लीला भई। आगें ऐराबतकुंड ऐराबत मानसी गंगा को जल लायो सो सूंड में सूं गिरो तासें कुंड भयो आगें हाथी के पाम को चिन्ह ताके आगे कंदवखंडो। आगें हरजीकुंड ताके आगे रुद्रकुंड रुद्र ने समाधि लगाई। आगें बिलासबन तहां राधाकृष्ण

नें दरपन में मुख देखो तहां बिलासवदन नाम श्रीमूर्त्ति। आगें गिरि के ऊपर दानघाटी तहां श्रीकृष्ण नें राधाजी सें दान लीनो। ता के आगे नौकाघाट जहां गोपिन कुं पार कीये श्रीकृष्ण ने। ता के आगें सोकरा ग्राम राधाजी को चाचा चंद्राबली को बाप को स्थान। आगें निर्मंछन स्थान जहां राधाकृष्ण की नौछाबर सखीन नें कीनी ताकूं नीम ग्राम कहें हैं। गिरि के निकट प्रेम-कुंड, क्षेम कुंड, प्रदान कुंड, ज्योत्स्ना कुंड, मोक्ष कुंड। गोवर्धन के पश्चिम एक कोश पै गांठोली ग्राम है तहां श्री राधाकृष्ण की अंचल ग्रंथ बांधी ललिता जी नें। तहां रत्नबेदी स्थान है। आगें ता के देवशीर्ष नाम कुंड, तहां देवतान नें स्तुति कीनी। ता के पश्चिम मुनिशीर्ष कुंड। ता के परै प्रमोदला स्थान तहां राधा-कृष्ण परस्पर देख के प्रमुदित भये। ताके आगे सेड़ कंदरा नाम तहां आदिवद्री श्री नारायण की मूर्त्ति है, तहां अलकनंदा नाम सर है। ता के आगे सोभनी गंधसिला, सामरी सिखर, श्वेत-पर्वत। तहां तें आगे झूलन स्थान तहां श्रावण शुक्ला तृतीया कुं श्री बृषभानराय ने झूला बनाये तहां राधाकृष्ण दोऊ झूले। सुमन सरोबर के पश्चिम सूर्य कुंड, तहां रबिमूर्त्ति को श्री राधा नित्य पूजन करें हैं। सुमन सरोवर के पश्चिम सखोथला ग्राम तहां उद्धव कुंड उद्धब कूप है। गोबर्द्धन सुं चलकें इंद्राली ग्राम तहां इंद्र ने गोपाल मंत्र को जप कीनो। कर्ण ने तप कीनो। तातें पश्चिम काम्यबन पूर्व कुं धर्म कुंड तहां श्री नारायण अधिष्ठाता। आगें पांडब कुंड, पांडब कूप तहां पांडब अज्ञात बास कीनो।

आगें बिमल कुंड, बिमलादेबी। आगें यशोदा कुंड श्रीकृष्ण नें गोचारण लीला कीनी। ताके आगें सेतबंध कुंड तहां रामलीला कीनी बंदरन पें पथर मगाय के सेत बाधो गोपीब

के कहे तें। तहां लंका व लंका कुंड, ता के पास लुकलुकान तहां श्री राधाकृष्ण आंखमिचोंनी खेले। पर्वत पै चरनपहाड़ी चरण चिन्ह। ता के उत्तर काम सरोवर जहां कामदेव ने तप कीनो। आगें प्रयाग कुंड जहां तीर्थराज प्रयाग ने तप कीनो बास कीनो। आगें गया कुंड, कृष्ण कुंड, सूर्य कुंड, सुरभी कुंड ताके पास खिसलनी सिला जहां कृष्ण बलदेव सखान संग हँस कै खिसले। ता के ऊपर भोजनथारी सखान संग भोजन कीनो। ता के पास चोरखेला स्थान ताहां व्योमासुर को गुफा है तहां व्योमासुर बध कीनो। ता के आगें चौरासी खंभ ता के आगे कामेश्वर महादेव, बिंदादेवी, ताके परें आटोर ग्राम उत्तर को बलदेब कुंड, आगें सुनहरा ग्राम, नागाजी की कदमखंडी। आगे रतन कुंड ब्रह्मा को स्थान, आगे गोपीरमण कुंड, श्रीकृष्ण को विहार स्थान। ताके आगे ऊंचो ग्राम, श्री बलदेव जी को रास स्थान। आगें बरसानो श्री वृषभानु का तहां महीभान मंदर सुखदा माता महीभान पिता वृषभान के। अष्ट सखीन की कुंज पर्वत के ऊपर लाड़ली जी को पमल तापै ऊँची अटारी तहां बैठ के नंदग्राम मैं रहै जो कृष्ण तिन को नित्य दरसन करें हैं। मंदर श्री राधाकृष्ण बिराजमान, ता के दक्षिण गहबरवन, तहां बिविध बिलास करें हैं। ता के दक्षिण दानगढ़ तहां कृष्ण ने राधाजी सें दान लीनो, ता के पास मानगढ़ तहां राधाजी ने मान कीनो चंद्राबली के संग रमन करत कृष्ण कुं देखकें। ता के पास मोरकुटी जहां मोरन संग कृष्ण नाचे। आगें बिलासगढ़, तहां बिलासबन तहां पूर्वानुराग में प्रथम मिलन भयो तहां धूलाखेला थान है। आगें सांकरी खोर दो पर्वत के बीच में तहां मटकी फोरी दही लूटो पाछें भाजे तहां लठीया को चरन को पगरी के पेच खुल गये ता को चिन्ह। तहां चिकसोली ग्राम तहां माचेन

पै बैठ के सखन सहित दधि भोजन कीनो। आगे पुष्पकुंड आगे दोहनीकुंड, जहां कृष्ण ने बृषभान की गाय दुही। पर्वत पै भानुकूप, श्री राधाजी ने प्रगट करायो। ग्राम के पूर्व दिशा में भानोखर तहां प्यारी के जल महल हैं। ता के पास बृषभान कुंड ग्राम के उत्तर पीलीपोखर तहां सखान सों कृष्ण बोले जल पी लेउ सो सब ने जल पीयो ताते पीयली नाम भयो। ता के पास ब्रषभानबाग ता के पास पीलू सरोबर जहां राधाकृष्ण को संकेत मिलन पीलू के बहु वृक्ष हैं। ताके आगे प्रेम सरोबर है। जहां राधाकृष्ण को प्रेम सों आंसू पड़े प्रस्बेद पड़े ता जल सों भरो है। ता के परें विह्वल कुंड जहां राधा बिना कृष्ण विह्वल भये। ताके आगे संकेतबट है, तहां संकेतकुंज में ललिता सुबल ने मिलन करायो श्रीराधा तें। तहां राधारमण को मंदर में मूर्त्ति है। संकेतदेबी को स्थान है, गोपालभट्ट गोस्वामी की भजन कुटी है। ता के पास कृष्णकुंड है तहां राधाकृष्ण को सायंकाल मिलन है। ता के दाहिने नंदग्राम तहां नंदीश्बर सिब। गोवर्द्धन नंदीश्वर कामेस्वर बृहत्सान ये चार पर्वत क्रम सुं बासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध स्वरूप जानिये। पर्बत के ऊपर ब्रजराज के महल हैं तहां चित्रसाला में बैठ कें श्रीकृष्ण राधा को दरसन करे है, आगे शैलाशन पांडुरासन तहां ब्रजराज की कचहरी है। ब्रजेश्वरी के दाहिने रोहिणी को गृह है, तहां बलदेब जी की चित्र-साला है, ताके पास मधुमंगल को गृह। पर्वत के चारों ओर चौरासी कुंड हैं। उत्तर दिशा में पाबन सरोबर ता के चौकोर कुंज कदंब के बृक्ष तहां सनातन गोस्वामी की भजनकुटी तहां श्रीकृष्ण प्रात:काल में सखान संग नित्य स्नान करे हैं। राधाकृष्ण जल बिहार करें हैं। मंदिर के चारों ओर सब ब्रजबासी उप-नंदादिकन के गृह हैं। तहां पर्जन्य तडाग है। श्री परजन्य जी

कुं नारद जी नें लक्ष्मीनारायण जी को मंत्र उपदेश कीनो, ता तप सुं पांच पुत्र भये उपनंद अभिनंद नंद सनंद नंदन। ये सब केशी दैत्य के भय से महाबन में बास कीयो, तहां उत्पात देख के नंदराय के व्रज में छकोकरा में बसे पाछें नंदग्राम में रहे। उपनंद सहार में, संनंदन बिछोर में, अभिनंद नंदन नंदीश्वर में पावन सरोवर के पास कर्ण सरोवर जहां कृष्ण को कर्णवेध भयो। ईशान कोण में नंदीश्वर तें धोयनीकुंड, तहां सब सब दोहनी दही की धोमें हैं। ताके परे कृष्ण कुंड तहां जलक्रीड़ा कृष्ण करें। ललिता कुंड, जहां राधाकृष्ण को मिलन होय। आगें सूर्यकुंड, तहां सूर्य ने तप कीनो है ललिता कुंड के अग्निकोण में बिसाखा कुंड, ता के नैऋत्य कोण में पौर्णमासी को कुटी है नंदीश्वर के अग्निकोण में सांदीपन की माता ब्रजवासिन की प्राहतानो तिनके निकट नांदीमुखी की पर्णशाला। ता के पास जसोदा कुंड, तहां अरुणोदय में यशोदा स्नान करें। तहां नृसिंहमूर्ति है, तिनको पूजन करें हैं कृष्ण को रक्षा के निमित्त। ता के आगे पश्चिम करेल कुंड, तातें परे चरनपहाड़ो पद चिन्ह। आगें मधुसूदन कुंड, आगे पनिहारी कुंड, यशोदा जी कृष्ण के पीमनें कुं जल मगामें हैं। ता के पश्चिम मनसादेवी हैं, ता के पास साहासि कुंड, तहां बट को वृक्ष राधाकृष्ण का झूलन स्थान, नंदीश्वर के वायुकोण में गेंडोखर, तहा कृष्ण गेंद सु खेले। ताके पश्चिम तप्तकुंड, नंदीश्वर के ईशान कोण में मुक्ता-कुंड तहां मोती बोये, नंदीश्वर के पूर्व बन में पद चिन्ह जहाँ अक्रूर लोटे हैं। अक्रूर कुंड, कदंमखंडी, रोहिणी कुंड, पूर्णमासी कुंड, मुखशोधन कुंड, ताके पास जोगिया स्थान, जहां उद्धव ने गोपिन कुं जोग शिक्षा दीनी। ता के पास जाबवट ग्राम राधाजी को ससुरार, गोलगोप ससुर, अभिमन्यु पति जटिला सास

कुटिला ननंदी। ता के दक्षिण कृष्ण कुंड, तहां राधाकृष्ण कों समिलन। पूर्व कु अद्भूतबट तहां रासलीला, ता के पश्चिम मुक्ताकुंड, तहां सखीजन राधाजी को मोतीन को शृंगार करैं खेलें। वायुकोण में पीपलकुंड, तहां उबटनो हलदी को लगाय कें धोयो स्नान कीने। ता के पश्चिम लाड़लीकुंड, नारदकुंड। ताके पास तड़िल्लता कुंड। ता के पश्चिम कोकिलाबन, तहां ललिता के कहे सें कोकिला की सी धुन वंशी में कीनो सों सुन कें राधिका जी आई तिनें बाग देखन के मिस कृष्ण पास ले गई। नंदीस्वर के पूर्व कूं अंजन बन तहां श्रीकृष्ण ने अंजन आंजो राधिका के। तहां कंदर्प कुतूहलो बाग है नंदीश्वर के अग्निकोण में करहरा ग्राम है तहां चंद्रावली पदमादिक को स्थान है, करालगोप को पुत्र गोवर्द्धनमल्ल चंद्राबली को पति है। ता के पास साहार ग्राम उपनंद को। ता के पास दक्षिण कुं मोरन ग्राम, सूर्यमूर्ति सूर्यकुंड, कंदर्प कुतूहलो ग्राम सूर्यकुंड के ईशान सांखिया ग्राम तहां संखचूड बध कीनों। सांखिया के ईशान पूर्व उमराउ ग्राम जहां राधिका कुं पौर्णमासी ने राज्याभिषेक कीनों ब्रजनाभ नें ग्राम बसायो तहां किशोरी कुंड, श्रीकृष्ण क्रीड़ा स्थान। ता के पूर्व नरीग्राम कृष्ण के मथुरा गमन समय ध्वजा धूलन दीखी सो गोपी नरी नरी कहकें मूर्छित भई तहां श्री बलदेब मूर्ति ब्रजनभ ने ग्राम बसायो। ताके पास खदिरबन, कदंमखंडी, संगमकुंड, जहां गोपीनें संगम करायो। नरी के उत्तर छत्रबन श्रीकृष्ण राजा भये तब श्रीदामा नें छत्र धारन कीनो। ता के पश्चिम कुशस्थलो ग्राम तहां द्वारका लीला रची। ता के पश्चिम जाब के निकट बकथरा ग्राम तहां बकासुर बध कीनो, ब्रजनाभ ने नाम धरो ग्राम बसायो। ता के पास लेउ छाक ग्राम जहां छाक

भोजन कीनी कृष्ण नें। जावबट के उत्तर बठेन ग्राम तहां सखान संग श्रीकृष्ण बैठे। ता के अग्निकोण में कृष्णकुंड तहां हुरंगा की लीला होय है। ता के उत्तर छोटी बठैन तहां कुंतल-कुंड ता के पश्चिम बेडोखर कुंड ताके ईशान कोण में चरन-पहाड़ी जहां श्रीकृष्ण ने बंसी बजाई ताको धुन सुनकें पर्वत पिघलो ता में पद चिन्ह गढ़े कृष्ण बलदेव गोप गौ सब के। ता के पास हरआनो ग्राम तहां चौपर केलन में कृष्ण कुं हराये राधाजी नें। वंशी हरि या ते होड़ल कहें। ता के परे सातोड़ा ग्राम कृष्ण लीला स्थान सूर्यकुंड, नंदकूप। ता के पास अजानक गढ़ लोहपर्वत। ता के पास पईग्राम चलनसिला, कामर, बिछोर ग्राम, बिछोर कुंड, कुंज रत्नबेदी में कृष्ण ने वंशी बजाय के राधा कुं बुलाइ संग बिहार भयो प्रेम में सब बिछुरी। ता के परे तिलोजरा ग्राम कदंमखंडी ता के उत्तर सिंगारबट तहां सुबल नें बन्य सिंगार कीयो कृष्ण को। ता के पास रासोली ग्राम तहां बसंत पंचमी सुं श्रीराधा सखिन सहित कृष्ण सखान सहित होली खेले रास भयो। ता के पास कोटबन, दधिग्राम, खीरसागर, श्रीकृष्ण ने शेषसाई लीला कीनी पौढ़नाथ भये राधिका जी ने चरन दावे। ता के पास फारेंन ग्राम प्रहलाद कुंड, होरी में पंडा निकसै हैं। ता के परे ब्रज के उत्तर ग्रामी ग्राम ब्रज की सीमा को खंभ गढ़ो तहां रामकृष्ण गोचारन करैं। ता के परे खरादो ग्राम जमुना के निकट गोचारन स्थान। ता के परे उजान ग्राम जहां वंशी धुनि सुन के जमुना उजान बही बिपरीत गति भई। ता के परे खेलातीर्थ, खेलनबट, जहां रामकृष्ण सखान संग धूला खेला करैं तिन्हें ब्रजरानी पकर ले गई घर में। ता के पूर्व रामघाट जहां चैत्र पूर्णमासी कुं बलदेव जी ने रास कीनो गोपिन के संग तहां पश्चिमबाहिनी

यमुना है। रामघाट के वायुकोण में कच्छबन जहां कच्छपरूप भये, ताके पूर्व भूषणबन, जहां वंसीधुत सुन रास को गोपीन नें भूषण पहराये। ताके प्ररे भांगीरबट तहां प्रलंवासुर को बध कीनो बलदेवजी ने। जहां राधाकृष्ण ने सखीन सहित मल्लयुद्ध कीयो ता वट कु अक्षयवट कहैं हैं। अक्षयबट के पूर्व तपोबन जहां गोपकन्या ने तप कीनों तहां गोपीघाट है। ता के पास चीरघाट कात्यायिनी देबी जहां गोपीन के चीर हरे कदम पै चढ़े ता में पद चिन्ह। भांडीरबट के पास अगिराग्राम मुंजाटबी जहां दाबानल पान कीयो। ता के आगें नंदघाट जहां नंदराय कूं वरुण लोक में ले गये। तहां भय ग्राम बसायो बज्रनाभ नें नंदघाट के नैऋत कोण में दो कोस पैं बच्छबन जहां ब्रह्मा ने बछरा चुराये। ताके पश्चिम जेमन स्थान जहां गहबर में पुलिन में सख्य मंडली सहित भोजन कीने। ता के पास सुनरख ग्राम जहां सौभरि ऋषि नें तप कीयो। ता के पास बालहार ग्राम जहां ब्रह्मा ने बालक हरे। बत्सबन के पश्चिम परिखा ग्राम। जहां श्रीकृष्ण की परिक्षा कीनी ब्रह्मा ने। ताके पास चौमुहां ग्राम जहां ब्रह्मा ने स्तुति कीनी। ता के पास जयत ग्राम जहां अघासुर के वध पाछै देबतान नें जय जय करी। ताके पास छोटो शेषसाई। ताकु सिहानो कहें। ता के पास तारोली ग्ररोली जहां अघासुर तरो है जोति कृष्ण में लीन भई। ता के पास ता के पास सांपोली ग्राम जहां सांप रूप धरो अघासुर नें। ता के आगे अघोबन जहां अघासुर मारो कृष्ण नें। नन्दघाट के अग्निकोण में यमुना के पार भद्रबन है जहां ग्रीष्म रितु में रामकृष्ण सखन संग गोचारण लीला करै ताके दक्षिण भांडीरबन जहां रामकृष्ण गेंद खेले। ता के दक्षिण माटग्राम जहां दही बिलोयो रामकृष्ण को खेलन स्थान ता के दक्षिण

बेलबन जहां बेल खाये रामकृष्ण नें तहां लक्ष्मी तप करै हैं ब्रजबास निमित्त ता से श्रीबन वो कहें हैं। ता के पूर्व मानसरोवर जहां मान करकें राधिका जी बैठी। ता के आगें लोहबन जहां लोहजंघ असुर कूं श्रीकृष्ण नें मारो। ता के आगें राबन राधिका को जन्म स्थान ब्रसभान की राजधानी। ता के परै गोकुल महाबन श्रीकृष्ण को जन्म स्थान नंदसदन। ता के पास पूतनामोक्ष स्थल। ता के पास सकटासुर भजन स्थान ता के पास तृणावर्त्त मोक्षस्थान ता के पास गोखिरक नामकरण स्थान। जहां गर्गाचार्य नें रामकृष्ण को नामकरण कीनो। महाबन के दक्षिण यमुना तीर ब्रह्मांड घाट जहां श्रीकृष्ण ने मृत्यका भक्षण कीयो। ता के पास मयलार्जुन भंजन स्थान सिंहपोल पै। ता के पास रमनरेतो जहां सखन संग लोटे। ता के तीन कोस पूरब कुं श्री बलदेव ग्राम बलदेव जी के दरसन। तहां गुलालकुंड बलदेब ग्राम महाबन के पार वृंदाबन तहां जमुनाबाग, भतरोण भोजन स्थल जहां यज्ञपत्नी पै सुं ले के भोजन कीयो। ता के पास अक्रूर घाट ब्रज की सीमा ता के बायव्यकोण में दावानल मोक्ष स्थान। कैवारी कुंड ता के पश्चिम कालीदह कदमवृक्ष कालीमर्दन ठाकुर। ता के पास ऊंचो टीलो मदनटेर तहां सूर्य्यघाट जब काली नाथो तब कृष्ण कुं सीत मिटो तब द्वादस सूर्य्य नें तेज कीनो तब सीत मिटो। ता के आगें प्रसगंदन घाट। तहां कृष्ण के श्रम तें पसीना गिरै यमुना में। ता के आगे जुगलघाट जहां प्रिया प्रीतम मिले। ता के पास इमलीतला राधाकृष्ण को बिहार स्थान जहां चैतन्यमहाप्रभू की बैठक स्थान। आगें शृंगारबट घाट। जहां प्यारी को शृंगार कीनो बैनो गूंथी रास में गोपिन कुं कहीं दरपन पायो। श्री नित्यानंदप्रभु की बैठक। ता के दक्षिण

सेवाकुंज तहाँ कृष्ण नें चरन सेवा कीनी। ताके पास चीरघाट रास में जलबिहार के समय वस्त्र धरे सो कृष्ण ने हरे आगे केशीघाट। जहाँ केशी मार के रुधिर को हाथ धोयो। केशीमर्दन ठाकुर भये। ताके पीछे दक्षिण में निधुबन विहारस्थान जहां श्रीराधारमण बिहार करें है। बिहारी जी प्रगटे। आगे ईशान कोण में धीरसमीरघाट कुंज तहाँ श्रीराधाजी के बिरह में ब्याकुल भये कृष्ण तब दूती ने मिलन करायो। ताके आगें बंशीबट जहां बंसी बजाय के गोपिन कूं बुलाई। ताके पास पुलिन हैं जहां गोपिन सुं उत्तर प्रत्युत्तर भये पाछे रास भयो। ताके पास गोपीस्वर शिव रासलीला देखवे कुं गोपीरूप धारन कोनो तहां सप्तसामुद्री कूप हैं। ताके नैऋतकोण में ब्रह्मकुंड है तहां सांझी के बनायबे कुं सखिन सहित राधिका जी आई श्रीकृष्ण सों वाद भयो कृष्ण हारे सो लीला दरसन कर कें ब्रह्मा कुं प्रेम भयो तासें कुंड प्रगट भयो ताके दक्षिण बेणुकूप जहां जलपान करन कू बेणु की फूंक मार के पाताल गंगा को जल निकासो। ताके आगे जोगपीठ स्थान जहाँ श्रीराधागोविंददेब बिराजै हैं।

इति श्री ब्रजजात्रा श्री सुन्दरलाल गोस्वामिना।

बिरचिता समाप्ता। संवत् १९०६ मिती आश्विन सुदी १० गुरुबार

—∞∞—

॥ श्री श्रीराधारमणाय नमः ॥

❀ श्रीराधारमण स्तोत्राष्टकम् ❀

विलोक्य श्यामश्रीभभिनवकिशोरत्वसुभगां
मुखेन्दुं च स्मेरामृतविलसितं यस्य कृतिनः।
हृतात्मानस्तृष्णां जहुरखिलसंसारवलितां
स देवः श्री राधारमण इह चित्ते स्फुरतु मे ॥१॥

श्रिया पादाभोजांचललसितया क्षुब्धमदनो
नखज्योत्स्नाध्वस्ताखिलहृदयतामिश्रपटलः।
रणत्कांचीश्रेणीकलितवसनावीतजघना
स देवः श्रीराधारमण इह चित्ते स्फुरतु मे ॥२॥

उरो यस्य स्फारं लसितमणिहारं युवतयाः
स्मरक्षोभं दृष्ट्वा दधति हृदये मत्तहृदयाः।
भजोच्चण्डक्रीड़ाप्रशमितभयः कोमलकरः
स देव. श्रीराधारमण इह चित्ते स्फुरतु मे ॥३॥

गृहीत्वा व्यत्यस्तस्थिरचरनिसर्गी मुरलिकां
करे सव्ये भंगीत्रयमधुरिमोल्लासितवपुः
स्थितो हैमे सिहासन उदितशीतांशुरिव यो
स देवः श्री राधारमण इह चित्ते स्फुरतु मे ॥४॥

कपोलान्तोल्लासिप्रसभरचलत्कुंडलयुगः
स्मितज्योत्स्नासीधुस्नपितवदनेन्दुज्वलरुचिः।
त्रिलोकी श्रीसंपन्निलयविपलारक्तनयनो
स देवः श्रीराधारमण इह चित्ते स्फुरतु मे ॥५॥

सुनासाग्रभ्राजद्विमलगजमुक्तामधुरिमा-
चलद्भ्रू विध्वस्तस्मरसुभगकोदण्डगरिमा ।
कृतक्रीडोत्तंसो मदशिखिशिखण्डैः सुरुचिरैः
स देवः श्रीराधारमण इह चित्ते स्फुरतु मे ॥६॥
व्रजानन्दिन् राधारमण मुरलीवक्त्र मधुर
कृपासिन्धो भक्तप्रिय मधुरमूर्त्ते प्रियतम ।
इति प्रेम्णा स्वीयैर्य इह बहुधा वर्णितगुणः
स देवः श्रीराधारमण इह चित्ते स्फुरतु मे ॥७॥
सुखं लोकातीतं निजचरणसेवासमुदितं
प्रदातुं स्वीयेभ्यः क्रमरचनया योऽर्चितपदः ।
अमीषां वै सर्वं स्वजनगृहवित्तादि किल यः
स देवः श्रीराधारमण इह चित्ते स्फुरतु मे ॥८॥
इति स्तोत्रं पद्याष्टकविरचितं योऽनुदिवसः
पठेद्भक्त्या राधारमणचरणाब्जस्मृतिकरम् ।
असौ देवः प्रीत्या निजचरणपद्मे रतिरसं
ददद्राधाप्रेयान् बिमलमनसं तं सुखयतु ॥९॥

"इति श्रीमद्रा रमणार्चित चरण प्रभुपाद श्रीलगोपी नाथदास गोस्वामी विरचित राधारमणस्तोत्राष्टकम्"

"सम्पूर्णम्"

।। श्री श्रीराधागोविन्दोजयति ।।

।। श्री हरि लीला जयति ।।

चरनपूर्णानंद जी कृत

ग्रन्थावली

रामनित्यानंद कृष्ण चैतन्य अवतार ।
प्रेम भक्ति प्रगट कीनों कीर्तन को परचार ।।१।।
वांछाकल्प तरु साधु गुरु भगवान ।
जिनकी चरन रज भूषण कोये होई त्रान ।।२।।
गुरु धन्नतरी अज्ञान अंध औषध कियो विचार ।।
कृष्ण प्रेम-अंजन एही आंजोवारहि वार ।।३।।
राम नित्यानंद वंश प्रभु राघवेन्द्र नाम ।
पतित चरन जू दास कों जिनों ही किनों त्रान ।।४।।
हूं दिन पतित पापी 'चरनदास' मेरो नाम ।
जो चरण शरण नेंकों मृतु भयो त्रिन ग्यान ।।५।।
प्रभु राघवेन्द्र पद ध्यान करो कोनों बिचार ।
हूँ दिन चरणदास भवार्णवतें कैसें उतरु पार ।।६।।
छोड़ विषय सर्वनाश कर भगति नवधा प्रधान ।
उपजै वैराग्य प्रेम महा हृदै प्रकासै ज्ञान ।७।।
नाम कीर्तन भागबत श्रवण करै अरु ध्यान ।
छूटै-अज्ञान प्रकाश होय विज्ञान रूप भगवान ।।८।।
साधु संग-कथा श्रवण नाम ही सों क्रितन ।
नाना जोनी जनम मरण तें छूटै निश्चैजन ।।९।।

त्रिन में आप कों नीच मानी सब कों कीजे सनमान ।
वृछ ऐसें सही लीजे कीजे नाम गुन गान ॥१०॥
निरूपैछं सांतं सुचि हो रहिये सदा मन ।
काहू सों वैर न कीजिये मानिये सब समान ॥११॥
आप इछा ए माया प्रकट करी आप करत विहार ।
आपहि पालै आप संघारै दूजो नाहिं आर ॥१२॥
प्रारवध वस जो कछु आवै सोइ रहि रहि ए पाय ।
संतोष चित्त ल्याय एक है मांगै वलाय ॥१३॥
सुष में न वाढ़िए दुष में हार न जाइ ।
सुष दुष देह कों मेरे जानैं बलाइ ॥१४॥
एका रहिए घर ना करिए न करिए काहू के आस ।
भजन में सदा मगन रहिए और न कीजे प्रयास ॥१५॥
त्रिया विषै का संग न कीजे नहिं सुनिये कान ।
दरसन ताको जानियें विषभछ समान ॥१६॥
लोभ कभूं न कीजिये नहिं कीजे संचय ।
कोर कछू वल तें लैत दै करी ए जय जय ॥१७॥
साधु संग तें साधु होय निश्चैए जानि ।
भगवान मेरौ सेव्य हूं जीव सेवक मानि ॥१८॥
नवधा भक्ति पंचरस सव को लीजे गुन ।
अपना भाव को दिढ़ करि सदा लगाइए मन ॥१९॥
भगवान सें तदाकार होइए होइ भगवान ।
भृंगि को ध्यान में कीट भृंगि होय असै जान ॥२०॥

(यह विवेक दोहा वोसी) अथ नाम माहात्म्य लिख्यते ॥

कलियुग में गौर भगवान अवतारी ।
सांगोपांगो अस्त्र पारिषद संग करी ॥२१॥

वेद आगम पुरान में एही निस्चय किन ।
हरि नाम विनें और उपाय नाहीं जान ॥२२॥
कृष्ण नाम जो कोउ जिभ्या अग्रे लेते जाय ।
अनेक जनम को पाप सब भसम होय ॥२३॥
हेलाए श्रृद्धाए परिहास में जो नाम लेवै ।
श्री कृष्ण वड़े रंगिआ ताको लेवें लगावैं ॥२४॥
एक बार नाम लियें सब आपद जावै ।
जो कोउ सदा नाउ लिये ताकौ महिमा कौन पावै ॥२५॥
चित दरपन नाम कीर्तन मार्जन होइ ।
भव त्रिविध ताप तें दिन दिन सीतल पाइ ॥२६॥
अविद्या को नास होय विद्या को होय प्रकास ।
भव रोग नामामृत औषद रोग होय नास ॥२७॥
सुमिरन होये त नाम लेयै सुष पावै ।
श्रवन होय कोई वाधा नाहि तिन एकत्र होइ ॥२८॥
और साधन करे ता नाम चाहे सो हाये ।
और साधन करे नाम लिये त भव तरि जाये ॥२९॥
मुष में नाम लेअत भागवत श्रवन करत ॥
मन में ध्यान रहत वेग संसार तरत ॥३०॥
कोटि गऊ दान करे सूरज ग्रहन में ।
काशी में गंगा को निकट उत्तम ब्राह्मन में ॥३१॥
प्रयाग मकर स्नान करें एक कल्पताईं ।
तथापि नाम कीर्तन को सम होय नाईं ॥३२॥
दान धर्म करत स्वर्ग जावै पुनि आवै संसार ।
नाम लियें तें जनम मरण छूटे एही बार ॥३३॥
सत्य तप त्रेता में जग्य द्वापर दान में जो होय ।
कलि में नाम साधन सब सिद्धि मिले सोए ॥३४॥

अजामिल पापी तर गयौ पुत्र को नामा भासै।
गनिका सुआ पढ़ाये कें तर गयौ अन आसै ॥३५॥
नाम लिये मननी मेल होय ध्यान में लगै।
माधुरी मूरति हृदै बैठे जव तव अज्ञान भगै ॥३६॥
अनेक जनम में ते किये हैं पाप पुण्य।
रासि रासि भयो है तासे छुटें होय धन्य ॥३७॥
पुन्य हैं यों सुने की वेडियां पाप भयो जे हेर।
अनेक जोनी में जनम मरण वहू भेल ॥३८॥
अनेक जनम को करम भयो है रूइ को रासि।
नाम साधन अग्नि भयो संचित कर्ध विनासि ॥३९॥
जव करम गयो तव भयो आतमा राम।
तऊ नाम न छोड़िए नाम आनंद को धाम ॥४०॥

(ततो कर्म साधन दोहा बीसी)

सुष धाम वृंदावन यमुना वहत तरंग।
स्याम सुंदर को आश्रय प्रभू राघवेन्द्र को संग ॥४१॥
नाहिं पढ़ूं शास्त्र छंद कबिता पद दोहा।
दोष गुन नाहिं लीजौ काहा जो हृद में आया ॥४२॥
तव ताहि कीन्हीं कर्म भोग लगी सुभ धर्म।
भागवत को नाहिं जानों श्रवन को मर्म ॥४३॥
श्रवन में श्रद्धा उपज्यो कियो सतगुरु आश्रय।
भगति भयो दो कला अविद्या चंउद् कला रऐ ॥४४॥
सजाति सनिग्ध साधु संग में किनो सिछ्या।
ध्यान जप पूजा आदि जैसें पायौ दिछ्या ॥४५॥
तव भयो साधु को संग तें भजन को जिग्यास।
भजन चउथाइ भयो रह्यौ अविद्या वार अंस ॥४६॥

दिन दिन जैसे भजन बढ़ते जाय।
तैसें तैसें ध्यान में मन लगते जाय ॥४७॥
तब काम क्रोध आदि नित छीन होइ जाइ।
विद्या छए अंस अविद्या दस अंस रए ॥४८॥
तब भयो भजन में निष्ठा उपज्यो जब राग।
दया जिबे साधु सेबे गोविंदे करत सदा राग। ४६॥
भयो विद्या अंधो गयो अविद्या आधो आ आध।
वैराग उपजै विज्ञान प्रकासै हृदै मांझ ॥५०॥
अन्य अभिलाषा छोड़ै ज्ञान और कर्म।
कृष्ण अनुसीलन करै एही भागवत धर्म ॥५१॥
दिन दिन रुचि उपजै वे भारे होय वैराग।
विद्या जानि दस अंस अविद्या दुइ भाग ॥५२॥
भयो आसक्ति न चाहै मुकति एह जान।
करै प्रेम न मानै नेम कव मिलेंगे स्याम ॥५३॥
भयो विद्या तीन चौथाइ आनंद नित बढ़ि जाय।
रह्यो अविद्या चउथाइ सो विछिन होइ जाय ॥५४॥
अश्रु कंप स्वेद पुलक होय अवृअट हास।
स्वंभ वैवर्ण उन्माद भाव को प्रकास ॥५५॥
छिन छिन विरक्ति अठ्यर्थ काल भजन।
चउद कला विद्या भयो अविद्या दुइ कला जन ॥५६॥
तव प्रेम उन्माद भयो अविद्या गयो नास।
उदय कियो विज्ञान को को हृदै भयो प्रकास ॥५७॥
स्थावर जंगम जहां देषिये सव ठौर भगवान।
माया को रचि जो देषिये ए सव माया जान ॥५८॥
देह बुद्धि में दास हूँ तव जीव बुद्धि में अंस।
ब्रह्म बुद्धि में सोहू अज्ञान भयो चंस ॥५९॥

आत्माराम होइ कें ना छांड़िये दास अभिमान ।
करिये अहैतुकि भक्ति साधक मत जान ॥६०॥

(ततो वैराग्य दोहा विंसि)

श्री नित्यानंद कौ वसुजानभा कौ विरचंद्र ।
तिनके रामचद्र कौ दिनदयाल राघवेन्द्र ॥६१॥
भगवान ते अधिक जिनके तिनके कृपा मानों ।
हूं दीन पतित चरण दास पूर्णानंद जानों ॥६२॥
अरे मूढ़ जिन करै तू धन को त्रिस्ना ।
धन कुल विद्या प्रजा कर्म को इह जाना ॥६३॥
चाहे से भिन मिले अन चाहने पाए ।
सुख दुष कर्म को भोग काल में सरिर जाय ॥६४॥
कौन को पुत्र कौन को भाइ कौन को है तू कांत ।
काय प्रान में समंध नाहीं होयगो देह के अंत ॥६५॥
वाल काल में षेलन चाहै जुवा में जुवति ।
वृद्ध में चिंता करै ऐसे देह में आसक्ति ॥६६॥
जावत विति उपार्जन करै तुहूं तव परिवार करे अनुरक्ति ।
वृद्ध होय सें कोउ न पूछे से होए विरक्ति ॥६७॥
नाहिं कर जु जन धन जोवन कौ गर्व ।
माया मय स्थायि नहीं काल हरैगो सर्व ॥६८॥
अर्थ अनर्थ न जानों चिन्ता करत सदा ।
कहे सुषि हये सदा दुषि जान जि सर्वदा ॥६९॥
काम क्रोध लोभ मोह इरिषा मछरता ।
छांड एह जान नरक जानें कौन चयता ॥७०॥
एक बड़े रूष में अनेक पछि रहये ।
प्रभात भये चारी दिसा जावें तैसे स्त्री पुत्र जानियें ॥७१॥

पथ में चले पथिक छाया में एक होय ।
विश्राम करि उठि जावें कौन सुप दुष पावें ॥७२॥
नदी तीर मे काष्ठ प्रभा में चलि आवें ।
मिले न्यारे होय ऐसें दारा पुत्र जानियें ॥७३॥
दिनरेन मास वरप ये काल को गति।
आयू हरत है देहपतन की रीति ॥७४॥
कँवल पत्र के जल जैसें चलाय मान ।
ऐसे देह में प्रान निश्चय ए जान ॥७५॥
पुन पुन जनमे मरै होय गर्भ वासा ।
पै सुनें कहै तभी न छोडै आसा ॥७६॥
चौदह भुवन में चौदे लोक में जो देषिए सुनिए ।
ब्रह्मा रुद्र महेन्द्र देवता काल में नास होय ॥७७॥
विपै इंद्र विपै सुकर सुष दुख समान ।
कवहुँ सुखी कवहुँ दुखी देषकर अनुमान ॥७८॥
पृथिवी के राज चक्र वर्तितभूं मन में दुषि ।
रूप तले वास भूमि में सोए जानु छूं सुषि ।७९॥
माया माया के भोग करै जानि करै वैराग ।
भगवान करिहैं हू रिनि जो मेरो कारन किन त्याग ॥८०॥

(ततो तत्व विचार दोहा विंसि)

एक विना दो सोरा नाहिं सोई जान सब ठौर ।
तत पद जो देषायौ वंदों सो मेर गुरु ॥८१॥
साध मेरौ गुरु भगत साधु भगवान ।
आपन सरूप जानत तभि कृष्ण मेरौ प्रान ॥८२॥
ब्रह्म सनातन एक नाहिं जाको आदि अंत ।
मन इंद्री ना पहुंचे निकट पंत ॥८३॥

चदउ लोक सात आवरन के ब्रह्मांड होवै।
जाको आगे मानों नाहिं दिये दिषावै ॥८४॥
एक अंसै पुरुष काल करी माया प्रगटि।
इच्छा भयो जब ब्रह्मंड करि वाकु दृष्टि ॥८५॥
माया पर दृष्टि किन भयो सुत्र ज्ञान रूप महत।
तातें भयो सत रज तम त्रिगुन अहंकार तत्व ॥८६॥
तम ते शब्द ताते आकास में परस परस में बायू।
वायु में रूप भयो तेज को उत्पति जानों ॥८७॥
तेज तें रस भयो ताते अपतेज से जानों गंध।
तामें भयो जि पृथिवी मात्रा भूत के एह संध ॥८८॥
रज गुन में वुधि भयो और इन्द्री दस।
सत में मन देवता इहय याको प्रकास ॥८९॥
विराट भयो एक देह वहु तत्व से।
माइक इह जड प्रार्थना कि नभ वान से ॥९०॥
सत चित सों जब आय प्रवेश कीनों।
तव कर्ता भुगता भोग्य के प्रकाशक इह जानों ॥९१॥
तासें ए भयो एक विराट चउद लोक औ मुर्ति।
अंग अंग सें देवता भयो वेद जप विर्ति निवृत्ति ॥९२॥
प्रवृत्ति कहिये पाप पुन्य सें भोगै नरक सरग।
निवृत्ति तत्व बिचार जानें आपनें सरूप अपवर्ग ॥९३॥
पवि विथा एहि जान............ ......।
वेद में वांधे वेद से छोड़ावै निच यह मान ॥९४॥
सुभा सुभ कर्म करी फिरत जो संसारैं।
भक्ति करै तत्व विचार होए भव सें पारें ॥९५॥
नंद नंदन प्रान धन तासे हेतु करै जोइ।
हृद में विज्ञान प्रकासै स्वरूप जानें सोइ ॥९६॥

अज्ञान एही जो मिथ्या माया में मानें आनंद ।
एही अज्ञान अंध जे ठंडी कों सांप कहें मंद ॥९७॥
आदि में सुना अंत में सुना मध्य में सुना जान ।
नाना रूप नाम धरे एही माया जान ॥९८॥
जेऊ देह चैतन्य आनंद रूप जान ।
माया देह आ कों अपनों मानें एही अज्ञान ॥९९॥
जाग्रत सुपन सुसुप्ति एहे माया को जान ।
इहां को जो द्रष्टा सोई आपनो मान ॥१००॥
विवेक नाम क्रम वैराग्य ज्ञान पांच विस मत ।
चरन पूर्णानंद हो कहे तिन दोहा सत ॥१०१॥
काहा करूं कहा जाऊं कहा सो कहूँ एह दुष ।
श्री लाल जू को दरशन विन विदरत एह मेर बुक ॥१०२॥

॥ इति ॥

ब्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

१. गदाधरभट्ट जी की वाणी (राधेश्याम गुप्ताजी से प्रकाशित) ॥)
२. सूरदास मदनमोहन जी की वाणी ,, ॥।)

---

३. माधुरीवाणी (माधुरीजी कृता) ॥=)
४. बल्लभ रसिकजी की वाणी ।=)
५. गीतगोविन्द पद (श्रीरामरायजीकृत) ।)
६. गीतगोविन्द (रसजानिवैष्णवदासजी कृत) ।)
७. हरिलीला (ब्रह्मगोपालजी कृता) =)
८. श्री चैतन्यचरितामृत (श्रीसुवलश्यामजी कृत) ४॥)
९. वैष्णववन्दना (भक्तनामावली) (वृन्दाबनदासजीकृता) =)
१०. विलापकुसुमाञ्जलि (वृन्दाबनदासजीकृत) ।)
११. प्रेमभक्तिचन्द्रिका (वृन्दाबनदासजी कृता) ।)
१२. प्रियादासजी की ग्रन्थावली ।=)
१३. गौराङ्गभूषणमञ्जावली (गौरगनदास कृता) ।)
१४. राधारमणरससागर (मनोहरजी कृता) ।)
१५. श्रीरामहरिग्रन्थावली (श्रीरामहरिजी कृता) ।−)
१६. भाषाभागवत (दशम, एकादश, द्वादश) (श्रीरसजानि-वैष्णवदासजी कृत) १)
१७. श्रीनरोत्तमठाकुर महाशय की प्रार्थना ॥)
१८. संप्रदायवोधिनी (कविवर मनोहरजी कृता) =)
१९. ब्रजमण्डलदर्शन (परिक्रमा) १)

२०. भाषाभागवत (महात्म्य, प्रथम, द्वितीय स्कंध) ।।)
२१. कहानीरहसि तथा कुंवरिकेलि (श्रीललितसखीकृत) ।)
२२. ब्रह्मसंहितादिग्दर्शिनीटीका की भाषा(श्रीरामकृपाजीकृता)॥=)
२३. किशोरीदास जी की वाणी ।।=)
२४. गौरनामरसचम्पू (कृष्णदासजीकृता) ।।=)
२५. क्षणदागीतिचिंतामणि (मनोहरदासजी) ।।)
२६. अष्टयाम (श्रीवृन्दाबनचन्द्रदास विरचित) १।)
२७. श्रीचैतन्यभागवत (आदि, अत्यन्तखंड) ५)
२८. स्मरणमंगलभाषा (गुणमंजरीकृता) ।)
२९. श्री ब्रजयात्रा–एवं चरनपूर्णानन्द जी ग्रन्थावली ।)

विद्यालय प्रेस, वृन्दाबन।